POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGALA HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

00160

सत्रांत परीक्षा

जून, 2016

एम.टी.टी.-003 : बांग्ला-हिन्दी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. समाचारों का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानियाँ बरतनी होंगी, सोदाहरण समझाइए। 20

अथवा

मातृभाषा के प्रभाव के कारण अनुवाद में किस प्रकार की विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं? उनसे बचने के उपाय क्या हैं, सोदाहरण समझाइए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

বছর	অগত্যা	সমান্তরাল	প্রতিশ্রুতি
কাছেপিঠে	এই বেশ	নথিভুক্ত	মাইনে
ভালবাসা	সামাল দিতে		

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के बांग्ला-पर्याय लिखिए : 5

कीचड़	तत्कालीन
मुस्कान	तबाही
मांग	नेक काम
दोपहर	आत्मनिर्भर
समापन	बहता है

4. नीचे दिए गए शब्दों का बांग्ला और हिन्दी में अर्थ बताते हुए हिन्दी और बांग्ला में उनका प्रयोग करें : 20

उद्‌भट	आयु	अतिरिक्त	अभ्यास
प्रतिष्ठा	विचार	व्यर्थ	चर्चा
धूप	ध्यान		

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : **4x10=40**

(a) सकाल प्राय न'टार समय माधव बई थेके मुख तोले। मानसी कथा बलार साहस ओ सुयोग पाय। माधवके देखेई एखन टेर पाओया याय गभीर मनोयोगेर सङ्गे तन्मय हये पड़ार घोरटा तार केटे गेछे।

'सारारात पड़ेछो'

मानसीर सुरटा राग आर अभिमान मेशानो अनुयोगेर। 'सारारात? तुमि सारारात जेगे थेके आमाय पड़ते देखेछो नाकि?'

'एगारोटाय शुलाम, देखलाम पड़छो। पाँचटाय उठलाम, तखनओ देखलाम पड़छो। सेई एकभावे बसे। सिगारेटेर छाई या जमेछे देखछि एकटा उनानेर छाई-एर चेये कम हबे ना, एसब देखे मने हबे ना, तुमि हयतो सारारात ठाय जेगे पड़ेछो?'

'ता मने हते पारे बटे!'

'तामाशा करछि ना।'

'निश्चय ना।'

मानसी आलगा आँचलटा गाये जड़िये देय। 'न' टा बाजे। भोरे चारु उनाने आँच दिये गेछे, सेई थेके निजेर मने उनान ज्वलछे। शुधु कयला चापिये याच्छि। चारबार ना पाँचबार शुधु तोमार चायेर जल फुटलो ब्यास्।' 'केन?'

काल रेशन आनोनि! आज एखनो बाजार एलो

না, থলি খালি, ঝুড়ি খালি, উনানে চাপাব কি?'

'এতক্ষণ বলো নি কেন?'

মুখে শুধু একটা বিষন্ন কাতর নালিশের ভঙ্গি ফোটে মানসীর। মুখ ফুটে সে কিছুই বলে না। মাধব শেষ সিগারেটটা ধরায়।

(b) কলকাতায় লীজ ভিত্তিতে
এন.বি.টি'র কার্যালয়ের জন্য স্থান

মানব সম্পদ উন্নয়ন মন্ত্রক, ভারত সরকারের স্বশাসিত প্রতিষ্ঠান ন্যাশনাল বুক ট্রাস্ট, ইন্ডিয়ার পূর্বাঞ্চল কার্যালয়ের জন্য এবং বই বিক্রয় কেন্দ্রের জন্য উপযুক্ত জায়গা প্রয়োজন। 2500 বর্গফুট যুক্ত এই জায়গা একতলা বা (গ্রাউন্ড ফ্লোর)-এ এবং সল্টলেক, ক্যামাক স্ট্রীট, পার্ক স্ট্রীট, শেক্সপিয়র সরণী, গড়িয়াহাট, রবীন্দ্র সদন, এলগিন রোড প্রভৃতি এলাকার মধ্যে হলে ভালো হয়।

কার্যালয়ের জায়গাটি মূল এলাকার সম্মুখস্থ হতে হবে এবং কার্যালয় ও ব্যবসায়িক ব্যবহারের জন্য অনুমোদিত হতে হবে।

আগ্রহী ব্যক্তি বা সংস্থা তাঁদের আবেদন ও প্রস্তাব জায়গাটির ছবি ও নক্সাসহ পাঠান এন.বি.টি'র আঞ্চলিক প্রবন্ধক, ন্যাশনাল বুক ট্রাস্ট, ইণ্ডিয়া, পূর্বাঞ্চলীয় কার্যালয়, জালান সেবা ট্রাস্ট বিল্ডিং, 61 মহাত্মা গান্ধী রোড, কলকাতা-700073 কে। আবেদন পত্র পাঠানোর শেষ তারিখ 7 ফেব্রুয়ারী 2014।

নির্দেশক, ন্যাশনাল বুক ট্রাস্ট, ইণ্ডিয়া কর্তৃক কারণ না দর্শিয়ে যে কোনো প্রস্তাব গ্রহণ ও বাতিল করার অধিকার সংরক্ষিত।

(c) সুকান্তর যখন শৈশবকাল, তখন তার বাবা ও তার জ্যাঠামশাই একসঙ্গে বেলেঘাটার হরমোহন ঘোষ লেনে একটি দু'তলা মাটকোঠায় বাস করতেন। ওঁদের একটি টোল আর একটি বইয়ের দোকান ছিল। সুকান্তর জ্যাঠামশাই কৃষ্ণচন্দ্র ওই টোলটি নিয়ে ব্যস্ত থাকতেন। আর বইয়ের দোকানটি দেখাশোনা করার ভার ছিল ওর বাবা নিবারণচন্দ্রের ওপর।

সুকান্ত ছিল তার পিতামাতার দ্বিতীয় সন্তান। সুকান্তরা ছিল ছয় ভাই : সুশীল, সুকান্ত, প্রশান্ত, বিভাস, অশোক এবং অমিয়। সুকান্তের বয়স যখন মাত্র ছ'বছর তখন বাংলা 1339 সালের শ্রাবণ মাসে সুকান্তর একমাত্র বৈমাত্রেয় বড় দাদা মনোমোহন ভট্টাচার্যের বিবাহ হয়। সুকান্ত তখন ছিল খুব কালো আর রোগা। তবু বাড়ির সকলের আদরের ছিল সে। মনোমোহন বাবুর স্ত্রী সরযূ দেবীও তাকে খুব আদর করতেন। তিনি বলেন সুকান্তর সেই শৈশবকালে পড়াশোনায় সুকান্তকে হাতে খড়ি দিয়েছিলেন তিনি। তিনিই সুকান্তকে অক্ষর পরিচয় করান। যোগীন্দ্রনাথ সরকারের 'খুকুমণির ছড়া' বইটা আনিয়ে তিনি সুকান্তকে ছড়া পড়াতেন আর সুকান্ত সেই সব ছড়া শুনে শুনেই মুখস্ত করে নিত। তারপর তা শোনাত বাড়ির সকলকে।

এমনি করে সুকান্ত মানুষ হয়ে উঠলো এক যৌথ পরিবারে যেখানে একদিকে ছিল প্রাচীন সংস্কৃত, সাহিত্য ও শাস্ত্রচর্চা অন্যদিকে অতি স্বাভাবিকভাবে যুগের হাওয়ায় নবযুগের সাড়া। রানীদির মাধ্যমে রবীন্দ্রকাব্যশ্রুতি আর দূর সম্পর্কের কাকা সরোজ ভট্টাচার্য এবং জেঠতুত দাদা গোপালচন্দ্র ও রাখালচন্দ্র ভট্টাচার্যের মাধ্যমে আধুনিকতার নাড়া। বাংলা সাহিত্যে তখন কল্লোল-কালি-কলম প্রগতির যুগ।

(d) (তিস্তার ঘর। দীপঙ্কর একা মঞ্চে। র‍্যাকের সামনে দাঁড়িয়ে বই উলটোচ্ছে। তিস্তা বাইরে থেকে ঢোকে। বোঝা যায় স্কুল থেকে ফিরছে।)

দীপঙ্কর : কী রে স্কুল ছুটি হয়ে গেল?

তিস্তা : হ্যাঁ। (ব্যাগ রাখে) চা খেয়েছ?

দীপঙ্কর : খেয়েছি। সন্দীপ ফিরল না?

তিস্তা : ফিরবে। ওকে স্যার ধরে নিয়ে গেলেন বাড়িতে।

দীপঙ্কর : প্রবোধবাবু সন্দীপকে বেশ স্নেহ করেন, তাই না?

তিস্তা : হুঁ, তুমি বোসো। আমি শাড়িটা ছেড়ে আসছি।

দীপঙ্কর : দুপুরে কাজের মেয়েটি এসে বলে গেল ,বিকেলে নাকি আসতে পারবে না। শরীর খারাপ। (বই উলটোয়) এ বইটা সন্দীপের নাকি রে? খোয়াবনামা-আখতারুজ্জামান ইলিয়াস। খানিকটা পড়লাম। বেশ অন্যধরনের লেখা।(তিস্তাড্রেসিংগাউন পরে আসে) বোস। খাবার গরম করে রেখেছি।

তিস্তা : সেকী! তুমি আবার ওসব করতে গেলে কেন?

দীপঙ্কর : ওই যে- কাজের মেয়েটি আসবে না শুনলাম।

তিস্তা : (ফ্লাস্ক থেকে চা ঢালে) এবার যেন কোনদিকে যাবে বললে?

দীপঙ্কর : জোংরি দোচালা

তিস্তা : বাবাঃ -সে তো শুনেছি বেশ টাফ রুট।

দীপঙ্কর : খুব একটা নয়। আমি এর আগে বার দুয়েক গেছি।

(e) আকাঙ্খা তাকে শান্তি দেয়নি,
শান্তির আশা দিয়ে বারবার
লুব্ধ করেছে। লোভ তাকে দূর
দুঃস্থ পাপের পথে টেনে নিয়ে
তবুও সুখের ক্ষুধা মেটায়নি,
দিনে-দিনে আরও নতুন ক্ষুধার
সৃষ্টি করেছে! সুখলোভাতুর
আশায় দিয়েছে আগুন জ্বালিয়ে।
এই যে আকাশ, আকাশের নীল,
এই যে সুস্থসবল হাওয়ার
আসা-যাওয়া, রূপরঙের মিছিল,
কোনোখানে নেই সান্ত্বনা তার।
বন্ধুরা তাকে যেটুকু দিয়েছে,
শত্রুরা তার সব কেড়ে নিয়ে
কোনো দূরদেশে ছেড়ে দিয়েছিল
কোনো দূর্গম পথে।

(f) ''ও পি--ও পিপি--ও প্রফুল্ল--ও পোড়ারমুখী।''
''যাই মা।''
মা ডাকিল--মেয়ে কাছে আসিল। বলিল, ''কেন মা?''
মা বলিল, ''যা না-ঘোষেদের বাড়ী থেকে একটা বেগুন চেয়ে নিয়ে আয় না।''
প্রফুল্লমুখী বলিল, ''আমি পারিব না। আমার চাইতে লজ্জা করে।''
মা। তবে খাবি কি? আজ ঘরে যে কিছু নেই।
প্র। তা শুধু ভাত খাব। রোজ রোজ চেয়ে খাব কেন গা?
মা। যেমন অদৃষ্ট ক'রে এসেছিলি। কাঙ্গাল গরিবের চাইতে লজ্জা কি?

প্রফুল্ল কথা কহিল না। মা বলিল, ''তুই তবে ভাত চড়াইয়া দে, আমি কিছু তরকারির চেষ্টায় যাই।''

প্রফুল্ল বলিল, ''আমার মাথা খাও, আর চাইতে যাইও না। ঘরে চাল আছে, নুন আছে, গাছে কাঁচা লঙ্কা আছে-মেয়ে মানুষের তাই ঢের।''

অগত্যা প্রফুল্লের মাতা সম্মত হইল। ভাতের জল চড়াইয়াছিল, মা চাল ধুইতে গেল। চাল ধুইবার জন্য ধুচুনি হাতে করিয়া মাতা গালে হাত দিল। বলিল,''চাল কই?'' প্রফুল্লকে দেখাইল, আধ মুটা চাউল আছে মাত্র-তাহা একজনেরও আধপেটা হইবে না।

মা ধুচুনি হাতে করিয়া বাহির হইল। প্রফুল্ল বলিল, কোথা যাও?''

মা। চাল ধার করিয়া আনি - নইলে শুধু ভাতই কপালে জোটে কই?

প্র। আমরা লোকের কত চাল ধারি- শোধ দিতে পারি না-তুমি আর চাল ধার করিও না।

মা। আবাগীর মেয়ে, খাবি কি? ঘরে যে একটি পয়সা নাই।

6. নিম্নলিখিত में से **किसी एक** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(a) मैंने भाई का चेहरा देखा। वे मेरी ओर देख रहे थे। उनकी आँखें लाल थीं और उनमें करुणा और कातरता थी, जैसे वे मुझसे याचना कर रहे हों कि मैं सच बोल दूँ। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। उन्हें सजा मिल चुकी थी। फिर इतनी जल्द बात को बिल्कुल बदलना मुझे संभव भी नहीं लग रहा था। क्या पता, पिताजी फिर मुझे ही मारने लगते! मैं डर रहा था।

यह घटना वर्षों पुरानी है। लेकिन भाई की वे कातर आँखें अब भी मुझे कभी-कभी घूरने लगती हैं। याचना करती हुई, सच बोलने की भीख माँगती हुई।

मेरी स्मृति में जब भी वे आँखें जाग उठती हैं, मेरी पूरी चेतना ग्लानि, बेचैनी और अपराध-बोध से भर उठती है।

मैं अपने इस अपराध बोध के लिए क्षमा माँगना चाहता हूँ। इस अपराध की सज़ा पाना चाहता हूँ। लेकिन अब तो माँ और पिताजी भी नहीं हैं, जिनसे मैं यह बताऊँ कि उस दिन ठीक-ठीक क्या हुआ था।

भाई ही मुझे क्षमा कर सकते हैं, जिन्हें मेरे झूठ का दंड भोगना पड़ा। उनसे मैंने इस घटना का जिक्र भी करना चाहा, लेकिन उन्हें वह घटना याद ही नहीं। वे इसे बिल्कुल, पूरी तरह भूल चुके हैं।

(b) नागार्जुन ने पहले 'यात्री' के नाम से मैथिली में कविताएँ की। 'यात्री' शब्द रवीन्द्रनाथ टैगोर से लिया। उनकी दो पुस्तिकाएँ-बूढ़वर' और 'विलाप' हाटों, बाज़ारों और मेलों में बिकती थीं। जनकवि बाबा कविता-पाठ करते पुस्तिकाओं को खुद बेचते थे। लोककवि की यही तो निशानी है। 'पारो' और 'चित्रा' संग्रह मैथिली कविताओं के छपे थे। साहित्य अकादमी का पुरस्कार मैथिली कविताओं के लिए ही मिला।

नागार्जुन ने गाँव में रहते जाति-पाँति के अनाचार, जमींदारों का शोषण और सत्ता की तानाशाही में पिसती जनता को देखा, तो विह्वल हो उठे। सिकुड़-सिकुड़ घुटते हुए जीना और मार सहना उन्हें नहीं जमा, सो मुक्ति की तलाश में गौतम बुद्ध बने सिद्धार्थ की तरह घर से निकल पड़े।

मध्ययुग के तमाम संत-कवियों के घर-गृहस्थी छोड़ने के यही तो कारण थे। उन लोगों ने माया छोड़ी और जगत् के नागरिक बन गये और संत हो गए। आधुनिक युग में माया-मोह छोड़ जगत् के नागरिक बने प्रगतिशील कवि-नागार्जुन, त्रिलोचन और शमशेर।